अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल
ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, BHOPAL
Saket Nagar, Bhopal (M.P.) – 462020

(जन सम्पर्क प्रकोष्ठ)

प्रेस विज्ञप्ति
(दिनांकः 23 जनवरी 2021)

1. **बुजुर्ग व्यक्ति की कैल्शियम के जमाव से बंद हृदय धमनी का एम्स, भोपाल में लिथॉट्रॉप्सी आधारित एंजियोप्लास्टी तकनीक द्वारा सफल उपचार किया गयाः**

एम्स, भोपाल के हृदय रोग विभाग द्वारा भोपाल के एक 70 वर्षीय बुजुर्ग व्यक्ति की एडवांस्ड इंट्रावस्कुलर लिथॉट्रॉप्सी के माध्यम से जटिल एंजियोप्लास्टी की गई। यह ऑपरेशन डॉ. गौरव खण्डेलवाल, सहायक प्राध्यापक, हृदय रोग विभाग एवं उनकी टीम द्वारा 20 जनवरी को किया गया।

कोरोनरी धमनी में हो गया था 99 प्रतिशत तक कैल्शियम का जमावः

उस बुजुर्ग को एक सप्ताह पहले सीने में तेज दर्द होने के चलते एक निकटवर्ती अस्पताल में भरती कराया गया था। वहां उसकी कोरोनरी एंजियोग्राफी करने पर पता चला कि हृदय को रक्त की आपूर्ति करने वाली नस में 99 प्रतिशत तक कैल्शियम का जमाव होने से वह पत्थर जैसी कठोर हो गई थी जिसकी वजह से आगे की ओर ना के बराबर रक्त प्रवाह हो रहा था। रोगी के सीने में लगातार दर्द हो रहा था और उसकी सांसें फूल रही थी। हृदय धमनी में अत्यधिक कैल्शियम जमाव के चलते चिकित्सकों द्वारा उसकी कोरोनरी आर्टरी बायपास सर्जरी (CABG) किए जाने की सलाह दी क्योंकी एंजियोप्लास्टी में जोखिम काफी ज्यादा था और कैल्शियम के अधिक जमाव की वजह से स्टेंट ठीक से फूल नहीं पाता और नस के फटने का भी डर बना रहता।

उसके बाद रोगी ने स्वयं को एम्स, भोपाल के हृदय रोग विभाग में दिखाया, जहां उसकी एडवांस्ड लिथॉट्रॉप्सी तकनीक के माध्यम से सफल एंजियोप्लास्टी की गई। डॉ. गौरव खण्डेलवाल ने बताया कि रोगी की उम्र अधिक होने की वजह से वह बायपास सर्जरी नहीं करवाना चाहता था। कैल्शियम के अत्यधिक जमाव वाली कोरोनरी धमनियों का एंजियोप्लास्टी के दौरान रॉट एब्लेशन (ड्रिलिंग) के माध्यम से उपचार किया जाता है जिसमें अधिक जोखिम रहता है। इंट्रावस्कुलर लिथॉट्रॉप्सी एक नई तकनीक है जिसमें जोखिम कम हो जाता है। यद्यपि मध्य प्रदेश में कुछ मामलों में इस तकनीक के द्वारा पूर्व में भी उपचार किया जा चुका है किंतु **संभवतया यह पहला ऐसा मामला था जिसमें कोरोनरी महाधमनी में ही कैल्शियम का अत्यधिक जमाव (धमनी लगभग पूर्णतया बंद) हो गया था।**

क्या होती है इंट्रावस्कुलर लिथॉट्रॉप्सी तकनीकः

सधारण एंजियोप्लास्टी में, बंद कोरोनरी धमनी को खोलने के लिए इसे एक गुब्बारे एवं स्टेंट की सहायता से फैलाया जाता है। लिथॉट्रॉप्सी में, कोरोनरी धमनी में एक विशेष गुब्बारे को डाला जाता है

जिससे तरंगे (शॉक वेव्ज) निकलती हैं जो अपनी स्पंदन उर्जा की मदद से जमे हुए कैल्शियम को तोड़ देता है। उसके बाद स्टेंट अच्छे से फैल जाता है और धमनी खुल जाती है। इस पद्धति का सामान्य तौर पर गुर्दे की पथरी को तोड़ने के लिए शॉक वेव देकर उपयोग किया जाता रहा है लेकिन हृदय की धमनियों में जमें कैल्शियम को तोड़ने के लिए इस पद्धति का प्रयोग बहुत ही नया है।

हृदय धमनी के लगभग 10 प्रतिशत रोगियों की धमनी में जमा होता है कैल्शियमः

सामान्यतया कैल्शिफाइड कोरोनरी आर्टरी के रोगियों को बायपास सर्जरी की सलाह दी जाती है। बायपास सर्जरी को एक बड़ा ऑपरेशन माना जाता है जिसमें रोगी को 07 से 10 दिन तक अस्पताल में भरती रहना पड़ता है। लिथॉट्रॉप्सी विशेष रूप से एकल कोरोनरी आर्टरी के रोगियों के लिए एंजियोप्लास्टी की एक प्रभावी सहायक पद्धति है। यह पद्धति बेहद सुविधाजनक है क्योंकि इसमें रोगी का उपचार बेहोश किए बगैर एवं बिना किसी चीर–फाड़ के किया जाता है एवं उन्हें एक या दो दिन में छुट्टी दे दी जाती है।

प्रो. सरमन सिंह, निदेशक, एम्स, भोपाल द्वारा हृदय रोग विभाग की इस उपलब्धि पर बधाई दी गई। उन्होंनें कहा कि संस्थान, क्षेत्र के लोगों को सर्वोत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए सतत् रूप से अपनी सेवाओं में सुधार के मार्ग पर अग्रसर है।

(डॉ.लक्ष्मी प्रसाद)
अपर चिकित्सा अधीक्षक एवं
जन सम्पर्क अधिकारी
दूरभाषः 0755–2832095